हमें चुनना यह है कि इलेक्शन या इंक़लाब

मेहनतकश साथियो !
नौजवान दोस्तो !
सोचो !

50 सालों तक चुनावी मदारियों से उम्मीदें पालने के बजाय यदि हमने इंक़लाब की राह चुनी होती तो भगत सिंह के सपनों का भारत आज एक हकीकत होता !

❖ ❖ ❖

धार्मिक कट्टरपंथ पूंजीवादी चुनावी राजनीति की दोगली औलाद है ! चुनावी मदारियों से पीछा छुड़ा लो ! समाजवादी क्रान्ति की राह अपना लो !

❖ ❖ ❖

हम तमाम मजदूरों किसानों, छात्रों-नौजवानों, स्त्रियों, बुद्धिजीवियों से, हर विवेकशील नागरिक से अपील करते हैं–

दंगे-फसाद और क्षेत्रीय झगड़ों की आग में पूरे देश को जलने से बचाओ !

वोट की राजनीति करने वाले, पूंजीपतियों के टट्टू राजनीतिज्ञों की असलियत पहचानो !!

फासिस्ट जुनून में बहने से बचो !!!

पूंजीवादी चुनावी राजनीति के क्रान्तिकारी विकल्प का निर्माण करो !

एक ही रास्ता – पूंजीवाद के नाश का रास्ता।
एक ही रास्ता – समाजवादी क्रान्ति का रास्ता

पूरी दुनिया में फिर से शुरू होगा समाजवादी क्रान्ति का नया सिलसिला !

पूंजीवाद की आज की जीत अन्तिम है और क्षणिक है।

❖ ❖ ❖

फिर चुनाव ?
क्या अब भी कोई उम्मीद बाकी बची है ?
रोज-रोज तुम अपनी ही कब्र खोदते रहोगे।
तो इस जालिम हूकूमत की कब्र कौन खोदेगा ?

❖ ❖ ❖

संसद और विधानसभाएं गुण्डों, डकैतों, वेश्यागामियों और तस्करों के अड्डे बन चुके हैं !

इनकी असलियत सामने आ गयी है ! सांसद और विधायक पूंजीपतियों की सत्ता के चाकर हैं !

दोगले और पतित भारतीय पूंजीवाद के चरित्र के अनुरूप ही इनका भी चरित्र है !

❖ ❖ ❖

कौन सी राह ?
इलेक्शन या इंकलाब ?
एक ओर हैं –

रक्तपिपासु धार्मिक, कट्टरपंथी और लाशों की आंच पर रोटियां सेंकते वोटों के व्यापारी, दूसरी ओर है –

दबी-कुचली, गरीब मेहनतकश आम आबादी !

तय करो किस ओर हो तुम !

चुनने की आजादी !

चुनाव करो ! तुम क्या पसन्द करोगे !

- भेड़ियों के निवाले बनना।
- जहरीले सांपों से डंसा जाना।
- गिद्धों–सियारों से नोंचा–खसोटा जाना।
- या खूंखार मगरमच्छों का पेट भरना।

चुनने की आजादी है।
चुन लो !